और जमा किया जा सकता है और जिसे किसान लोग तरल खाद की अपेक्षा प्रयोग करना अधिक पसन्द करते हैं, तैयार करने की कोई योजना कार्यन्वित की जा रही है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (श्री अन्नासाहिब शिन्दे) : (क) गोबर गैस कारखाने में तरल रुप में तैयार खाद को इस्तेमाल करने में किसान अनिच्छा प्रकट करते हैं, इसका मुख्य कारण यह है कि इस खाद को पकड़ने में, भण्डारण और खेत में इस्तेमाल करने में कठिनाई होती है ।

(ख) जी हां । भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में एक युक्ति निकाली गई है जिसके द्वारा तरल गारे को ड्राई लीव्स एण्ड सा-डस्ट के एब जोरबिंग कालम से गुजरात जाता है जो ठोस सामग्री को रोक लेता है और पानी नीचे बह जाता है । फिर यह ठोस सामग्री आसानी से पकड़ने में आ जाती है ।

वैकल्पित रुप से जहां उपयोगी है तरल गारें कोठोस मिटटी पर फैलाया जाता है और धूप में सुखाया जाता है फिर आवश्यकतानुसार उस प्रयोग में लाया जा सकता है ।

दिल्ली दुग्ध योजना

5554. **श्री महाराज सिंह भारती :** क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने क कृपा करेंगे कि दिल्ली से बहार के स्थानों में जहां कि दिल्ली दुग्ध योजना के लिए दूध इकट्ठा किमा जाता है दुदारू ढारों की नस्ल सुजारने तथा सस्ते चारे और लित्तिम सहायता की व्यवस्था करने के गिए सरकार क्या कर्यवाही कर रही है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मन्त्रालय में राज्य मंत्री (श्री अन्नासाहिब शिन्दे) : दिल्ली दुग्ध योजना के लिए दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत सरकार ने जन 1967 में राजस्थान (1) उत्तर प्रदेश (1) तथा हरियाणा (2) में 4 सघन पशु विकास खण्डों की स्थापना करने के विषय में मंजूरी दे दी थी । चालू वर्ष में इस प्रयोजन के लिए 25 लाख रुपये व पांच वर्षों की अवधि के लिए 313.52 लाख रुपये निर्धारित किये गए । ये केन्द्रीय प्रायोजित परियोजमायें हैं जिनके लिए केन्द्र 75 प्रतिशत अनुदान व 25 प्रतिशत ऋण देता है । ये परियोजनायें बीकानेर (राजस्थान) मेरठ (उत्तर प्रदेश) करनाल व गुड़गांव (हरियाणा) में स्थित हैं जहां से दिल्ली दुग्ध योजना दूध प्राप्त कर रही है या प्राप्त करेगी । ये विस्तृत योजनायें कृषि उत्पादन के पैकेज कार्यक्रम पर आधारित हैं और इनका सम्बन्ध नियन्त्रित प्रजनन, बड़े स्तर पर बधियाकरण करने, कारगर रोग नियन्त्रण, बछड़े पालन दाने-चारे के विकास, ग्रामीण डेरी विस्तार तथा दुग्ध उत्पादकों की सरकारी संस्थाओं आदि पशु विकास की समस्त योजनाओं से है । इस योजना के अन्तर्गत 4.87 लाख प्रजनन योग्य गायें व भैंसें आती हैं । दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु पशु विकास पर विशेष बल दिया जाता है । यह कार्य उन्नत भारतीय नस्लों व उपयुक्त विदेशी नस्लों के विकास और दाने व चारे के संसाधनों के विकास के माध्यम से किया जाता है । कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों उप-केन्द्रों का जाल बिछा कर गोजातीय पशुओं के प्रजनन हेतु सुविधायें प्रदान की जाती हैं । ये केन्द्र इन परियोजनाओं के अन्तर्गत स्थापित किये गये हैं या स्थापित किए जायेंगे । कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों में धातु एकत्रित करने व पशुओं को गर्भाधान कराने में प्रयोग करने हेतु अच्छी नस्ल के सांड़ रखे गये हैं । इनमें से कुछ अच्छी नस्ल के सांड़ों की धातु कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों से उपकेन्द्रों को भेजी जाती हैं जिससे कि ग्रामों की गायों को गर्भाधान कराया जाये और इन परियोजनाओं के क्षेत्रों में पशुओं की सन्तति में सुधार किया जा सके । अब तक इन परियोजनाओं के

क्षेत्रों में 17 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों व 50 ए० आई० उपकेन्द्रों की स्थापना हो चुकी है ।

परियोजना के क्षेत्र में दाने चारे का जो कार्यक्रम शुरु किया गया है उसमें बीजों का उत्पादन व वर्धन चारागाह क्षेत्रों का विकास, दाना चारे के मिश्रण के संयंत्र, दुधारु पशुओं के लिए मानकीकृत व सन्तुलित आहार का वितरण करना सिंचाई के लिए नलकूपों का लगाना, सिलोपिटस का निर्माण करना तथा सहाय्य प्राप्त मूल्यों पर कुटटी काटने की मशीनों का वितरण करना आदि शामिल हैं । अब तक चारे के विषय में 200 प्रदर्शन किए जा चुके हैं और मेरठ परियोजना के क्षेत्रों के कृषकों को 2000 एकड़ भमि के लिए चारे की विभिन्न किस्मों के बीज सप्लाई किये गये हैं । बीकानेर की आईसीडी परियोजना के अन्तर्गत एक चारे दाने के मिश्रण-नियन्त्र का क्रय किया गया है । यह संयत्र शीघ्र ही कार्य शुरू कर देगा । 1968-69 को अवधी में समस्त परियोजनाओं के अन्तर्गत सघन चारे विकास के कार्यक्रमों को शुरू करने का प्रस्ताव है जिनमें निम्नलिखित कार्य शामिल होंगे : 600 प्रदर्शन प्लाटों का तैयार करने, 95 कुन्डों का निर्माण करना, २० कुओं की मरम्मत करना, 100 नदियों का नवीकरण करना, 5 चारे के मिश्रण-संयंत्रों स्थापना करना और इन परियोजनाओं के क्षेत्रों में 1000 एकड़ भमि में चरागाह भमि का विकास करना । इन योजनाओं के अंतर्मत सहकारी संस्थाओं और कृषकों के लिए पशु/पशुआहार के क्रय हेतु ऋण प्रदान करने की सुविधायें भी मौजद हैं । सहकारी संस्थाओं को दूध इकट्ठा करने व दूध की जांच करने के लिए अग्रिम रूप से ऋण भी दिये जाते हैं । इसके अतिरिक्त सहकारी संस्थाओं को सन्तुलित दाने-चारे की एककों की स्थापना करने के लिए अग्रिम रूप से ऋण दिए जाते हैं । चालू वित्तीय वर्ष की अवधि में शुरूआत कर दी गई है और पशु पालकों को दुधारु पशु खरीदने के लिए 2.70 लाख रुपया की रकम बांटी जा रही है ।

Fake British Postal Orders

5555. SHRI BABURAO PATEL: Will the Minister of COMMUNICATIONS be pleased to state:

(a) the names of persons arrested in connection with fake British Postal Orders discovered in Kashmir;

(b) the number and amount of fake postal orders involved in this international racket;

(c) the *modus operandi* of the racketeers and the nature of warning issued to the public; and

(d) the steps taken to stop this racket?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENTS OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND COMMUNICATIONS (SHRI I. K. GUJRAL): (a) Only one person, Shri Mohammad Yousuf Shah, has been arrested so far.

(b) 25 fake British Postal Orders amounting to Rs. 2600 have been encashed and 400 uncashed fake BPOs of £ 5 denomination have been seized during investigations.

(c) Fake B.P.Os look like original ones and bear forged impressions of the seal of the office of issue. Name of the payee has been written in manuscript and payment has been received at the post office on identification. The case is still under investigation with the police. The question of issuing any warning to the public will be considered on details becoming available on completion of investigations regarding the *modus operandi* adopted.

(d) Suitable instructions have been issued to all post offices to guard against the encashment of such B.P.Os.